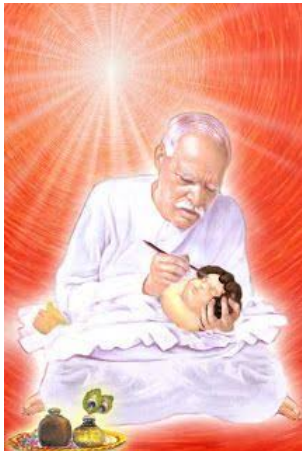




20-12-2025 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - सतगुरू आया है तुम्हारी ऊंची तकदीर बनाने तो तुम्हारी चलन बहुत-बहुत रॉयल होनी चाहिए"



प्रश्न:- ड्रामा का कौन सा प्लैन बना हुआ है इसलिए किसी को दोष नहीं दे सकते हैं?

उत्तर:- ड्रामा में इस पुरानी दुनिया के विनाश का प्लैन बना हुआ है, इसमें कोई का दोष नहीं है। इस समय इसके विनाश के लिए प्रकृति को जोर से गुस्सा आया है। चारों ओर अर्थक्वेक होगी, मकान गिरेंगे, फ्लड आयेगी, अकाल पड़ेगा इसलिए बाप कहते हैं बच्चे अब इस पुरानी दुनिया से तुम अपना बुद्धियोग निकाल दो, सतगुरू की श्रीमत पर चलो। जीते जी देह का भान छोड़ अपने को आत्मा समझ बाप को याद करने का पुरुषार्थ करते रहो।



हमें उन राहों पर चलना है
हमें उन राहों पर चलना है
जहाँ गिरना और संभलना है
हमें उन राहों पर चलना है
जहाँ गिरना और संभलना है
हम हैं वो दिये औरों के लिये
जिन्हें तूफानों में जलना है

को: हमें उन राहों पर चलना है
जहाँ गिरना और संभलना है

जब तक न लगन हो सीने में
बेकार है ऐसे जीने में
जब तक न लगन हो सीने में
बेकार है ऐसे जीने में
चढ़ना है हमें चंदा की तरह
सूरज की तरह नहीं ढलना है

को: हमें उन राहों पर चलना है
जहाँ गिरना और संभलना है
हम हैं वो दिये औरों के लिये
जिन्हें तूफानों में जलना है
हमें उन राहों पर चलना है
जहाँ गिरना और संभलना है

मैं पास रहूँ या दूर रहूँ
ये बात अभी तुम से कह
मैं पास रहूँ या दूर रहूँ
ये बात अभी तुम से कह
हँसना ही नहीं फूलों की तरह
दीपक की तरह हमें जलना है

गीत:-हमें उन राहों पर चलना है.....



Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

20-12-2025 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

ओम् शान्ति। किन राहों पर चलना है? गुरु की

राह पर चलना है। यह कौन सा गुरु है? उठते-

बैठते मनुष्यों के मुख से निकल जाता है वाह गुरु।

गुरु तो अनेक हैं। वाह गुरु किसको कहेंगे?

किसकी महिमा गायेंगे? सतगुरु एक ही बाप है।

भक्ति मार्ग के ढेर गुरु हैं। कोई किसकी महिमा

करते, कोई किसकी महिमा करते हैं। बच्चों की

बुद्धि में है सच्चा सतगुरु वो एक है, जिसकी ही

वाह-वाह मानी जाती है। सच्चा सतगुरु है तो

जरूर झूठे भी होंगे। सच होता है संगम पर। भक्ति

मार्ग में भी सच की महिमा गाते हैं। ऊंच ते ऊंच

बाप ही सच्चा है, जो ही लिबरेटर, गाइड भी बनता

है। आजकल के गुरु लोग तो गंगा स्नान पर वा

तीर्थों पर ले जाने के गाइड बनते हैं। यह सतगुरु

तो ऐसा नहीं है। जिसको सभी याद करते हैं - हे

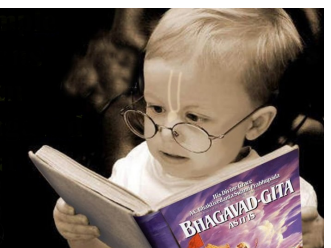
पतित-पावन आओ। पतित-पावन, सतगुरु को ही

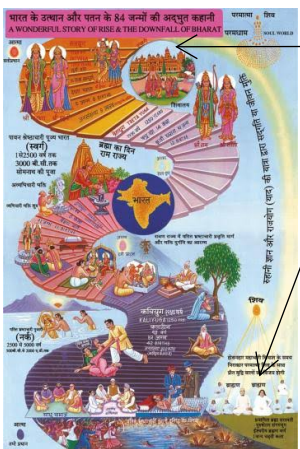
कहा जाता है। वही पावन बना सकते हैं। वो गुरु

लोग पावन बना न सकें। वह कोई ऐसे नहीं कहते

कि मामेकम् याद करो। भल गीता भी पढ़ते हैं

परन्तु अर्थ का पता बिल्कुल नहीं है। अगर





20-12-2025 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

समझते सतगुरु एक है तो अपने को गुरु नहीं कहलाते। ड्रामानुसार भक्ति मार्ग की डिपार्टमेंट ही अलग है जिसमें अनेक गुरु, अनेक भक्त हैं। यह

तो एक ही है। फिर यह देवी-देवतायें पहले नम्बर में आते हैं। अभी लास्ट में हैं। बाप आकर इन्हीं को सतयुग की बादशाही देते हैं। तो और सबको ऑटोमेटिकली वापिस जाना है, इसलिए सर्व का

सद्गति दाता एक कहा जाता है। तुम समझते हो कल्प-कल्प संगम पर ही देवी-देवता धर्म की स्थापना होती है। तुम पुरुषोत्तम बनते हो। बाकी और कोई काम नहीं करते। गाया भी जाता है गति- सद्गति दाता एक है। यह बाप की ही महिमा है।

गति-सद्गति संगम पर ही मिलती है। सतयुग में तो है एक धर्म। यह भी समझ की बात है ना। परन्तु यह बुद्धि देवे कौन? तुम समझते हो बाप ही आकर युक्ति बताते हैं। श्रीमत देते हैं किसको?

आत्माओं को। वह बाप भी है, सतगुरु भी है, टीचर भी है। ज्ञान सिखलाते हैं ना। बाकी सब गुरु भक्ति ही सिखलाते हैं। बाप के ज्ञान से तुम्हारी सद्गति होती है। फिर इस पुरानी दुनिया से चले

Points: **ज्ञान** **योग** **धारणा**



20-12-2025 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

जाते हैं। तुम्हारा यह बेहद का संन्यास भी है। बाप ने समझाया है अभी 84 जन्मों का चक्र तुम्हारा

पूरा हुआ है। अब यह दुनिया खत्म होनी है। जैसे कोई बीमार सीरियस होता है तो कहेंगे अब यह तो

जाने वाला है, उसको याद क्या करेंगे। शरीर खत्म हो जायेगा। बाकी आत्मा तो जाकर दूसरा शरीर

लेती है। उम्मीद टूट जाती है। बंगाल में तो जब देखते हैं उम्मीद नहीं है तो गंगा पर जाकर डुबोते हैं

कि प्राण निकल जायें। मूर्तियों की भी पूजा कर फिर जाकर कहते हैं डूब जा, डूब जा... अभी तुम

जानते हो यह सारी पुरानी दुनिया डूब जानी है। फ्लड्स होंगी, आग लगेंगी, भूख में मनुष्य मरेंगे।

यह सब हालतें आनी हैं। अर्थक्वेक में मकान आदि गिर पड़ेंगे। इस समय प्रकृति को गुस्सा

आता है तो सबको खलास कर देती है। यह सब हालतें सारी दुनिया के लिए आनी हैं। अनेक प्रकार

का मौत आ जाता है। बॉम्ब्स में भी ज़हर भरा हुआ है। थोड़ी बांस आने से बेहोश हो जाते हैं। यह

तुम बच्चे जानते हो कि क्या-क्या होने का है। यह सब कौन कराते हैं? बाप तो नहीं कराते हैं। यह

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

How Lucky we are....!

20-12-2025 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

ड्रामा में नूंध है। कोई पर दोष नहीं देंगे। ड्रामा का प्लैन बना हुआ है। पुरानी दुनिया सो फिर नई जरूर होगी। नेचुरल कैलेमिटीज़ आयेंगी। विनाश होने का ही है। इस पुरानी दुनिया से बुद्धि का योग हटा देना, इसको बेहद का संन्यास कहा जाता है।

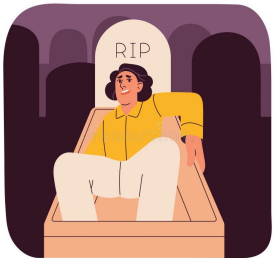
No one can stop it...

Definition of

किन शब्दों में आपका धन्यवाद करे...
दिन रात की ये सेवा हम याद करे..

Thank you so much मेरे मीठे बाबा...

अब तुम कहेंगे वाह सतगुरु वाह! जो हमको यह रास्ता बताया। बच्चों को भी समझाते हैं - ऐसी चलन नहीं चलो जो उनकी निंदा हो। तुम यहाँ जीते जी मरते हो। देह को छोड़ अपने को आत्मा समझते हो। देह से न्यारी आत्मा बन बाप को याद करना है। यह तो बहुत अच्छा कहते हैं वाह सतगुरु वाह! पारलौकिक सतगुरु की ही वाह-वाह होती है। लौकिक गुरु तो ढेर हैं। सतगुरु तो एक ही है सच्चा-सच्चा, जिसका फिर भक्ति मार्ग में भी नाम चला आता है। सारी सृष्टि का बाप तो एक ही है। नई सृष्टि की स्थापना कैसे होती है, यह भी किसको पता नहीं है। शास्त्रों में तो दिखाते हैं



मेरे सतगुरु प्यारे दा , दरबार बड़ा सोहणा है
इत्थे दर्शन होदे ने, दीदार बड़ा सोहणा है
दीदार बड़ा सोहणा है , परिवार बड़ा सोहणा है
मेरे सतगुरु प्यारे दा, दरबार बड़ा सोहणा है

१. मैनु सारे पुछदे हैं, मेरे संगी ते साथी
जिनने इक वारि देख लई मेरे सतगुरु दी झांकी
कित्थे दून्ढ के ल्यांदा है, ये लाल बड़ा सोहणा है
मेरे सतगुरु प्यारे दा ...

२. मैनु आपे नई मिलया सतगुरु ने मिलया है
इत्थे मिलने दा मैनु रासता सतगुरु ने दिखाया है
मेरे सतगुरु प्यारे दा , उपकार बड़ा सोहणा है
मेरे सतगुरु प्यारे दा ...

३. ये मानसरोवर है, इत्थे मोती मिलदे हैं
कई जन्मा दे बिछड़े प्रेमी, इस दर ते मिलदे हैं
ये घाटे का सौदा नहीं , व्यापार बड़ा सोहणा है
मेरे सतगुरु प्यारे दा ...

४. मेरे सतगुरु प्यारे दी, बड़ी शान निराली है
इत्थे रोज़ दशहरा है, इत्थे रोज़ दिवाली है
इत्थे तन मन रंग देते, रंगदार बड़ा सोहणा है
मेरे सतगुरु प्यारे दा ...

यस्पतिरेक एव नमस्यो विक्ष्वीज्यः

अथर्ववेद २/२/१

Poi

सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का एक ही स्वामी है। वही सबके द्वारा नमस्कार करने के योग्य है, वही प्रशंसा करने के योग्य है।

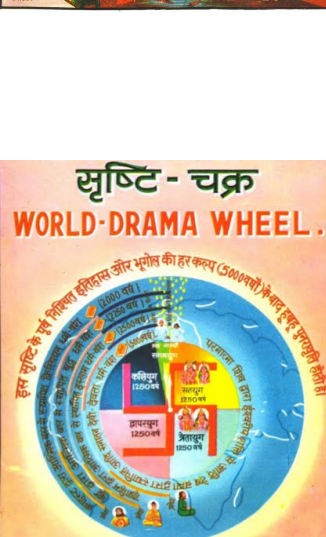
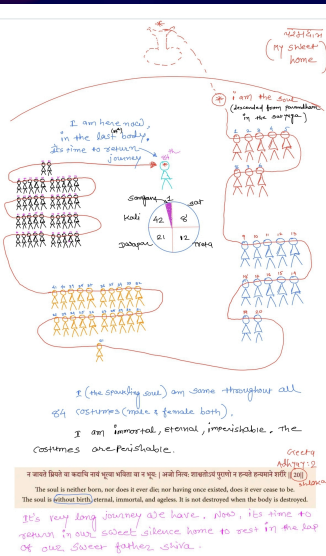
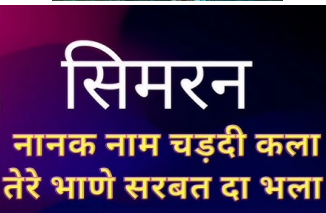
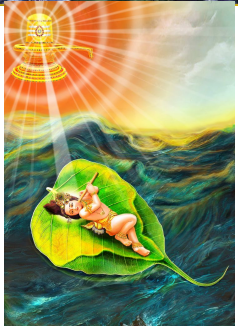
योग

धार चढ़ाओ नशा..

M.imp.

5

But we know, How Lucky & Great we are..!



20-12-2025 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

प्रलय हो गई फिर पीपल के पत्ते पर श्रीकृष्ण
आया। अभी तुम समझते हो पीपल के पत्ते पर
कैसे आयेगा। श्रीकृष्ण की महिमा करने से कुछ
फायदा नहीं होता। तुम्हें अब चढ़ती कला में ले
जाने के लिए सतगुरु मिला है। कहते हैं ना चढ़ती
कला तेरे भाने सर्व का भला। तो रूहानी बाप
आत्माओं को बैठ समझाते हैं। 84 जन्म भी
आत्मा ने लिए हैं। हर एक जन्म में नाम-रूप दूसरा
हो जाता है। ऐसे नहीं कहेंगे फलाने ने 84 जन्म
लिये हैं। नहीं, आत्मा ने 84 जन्म लिया। शरीर तो
बदलते जाते हैं। तुम्हारी बुद्धि में यह सब बातें हैं।
सारी नॉलेज बुद्धि में रहनी चाहिए। कोई भी आये
तो उनको समझायें। आदि में था ही देवी-देवताओं
का राज्य, फिर मध्य में रावण राज्य हुआ। सीढ़ी
उतरते रहे। सतयुग में कहेंगे सतोप्रधान फिर सतो,
रजो, तमो में उतरते हैं। चक्र फिरता रहता है। कोई
-कोई कहते हैं बाबा को क्या पड़ी थी जो 84 के
चक्र में हमको लाया। लेकिन यह तो सृष्टि चक्र
अनादि बना हुआ है, इनके आदि-मध्य-अन्त को
जानना है। मनुष्य होकर अगर नहीं जानते तो वह

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Definition of

20-12-2025 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन



नास्तिक हैं। जानने से तुमको कितना ऊंच पद मिलता है। यह पढ़ाई कितनी ऊंच है। बड़ा इम्तहान पास करने वाले की दिल में खुशी होती है ना, हम बड़े ते बड़ा पद पायेंगे। तुम जानते हो यह लक्ष्मी-नारायण अपने पूर्व जन्म में सीख-कर फिर मनुष्य से देवता बनें।



इस पढ़ाई से यह राजधानी स्थापन हो रही है। पढ़ाई से कितना ऊंच पद मिलता है। वन्दर है ना।



How Great we are...!

इतने बड़े-बड़े मन्दिर जो बनाते हैं अथवा जो बड़े-बड़े विद्वान आदि हैं उनसे पूछो सतयुग आदि में इन्होंने जन्म कैसे लिया तो बता नहीं सकेंगे। तुम जानते हो यह तो गीता वाला ही राजयोग है। गीता

पढ़ते आये हैं परन्तु उससे फायदा कुछ नहीं है। अब तुमको बाप बैठ सुनाते हैं। तुम कहते हो बाबा हम आपसे 5 हज़ार वर्ष पहले भी मिले थे। क्यों मिले थे? स्वर्ग का वर्सा लेने। लक्ष्मी-नारायण बनने के लिए। कोई भी छोटे, बड़े, बूढ़े आदि आते हैं, यह

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

20-12-2025 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "ॐ नमो भगवते वासुदेवाय" मधुबन



जरूर सीखकर आते हैं। एम ऑब्जेक्ट ही यह है।

Refer
pg-86

सत्य नारायण की सच्ची कथा है ना। यह भी तुम समझते हो, राजाई स्थापन हो रही है। जो अच्छी

रीति समझ लेते हैं उनको आन्तरिक खुशी रहती है। बाबा पूछेंगे हिम्मत है ना राजाई लेने की?

कहते हैं बाबा क्यों नहीं, हम पढ़ते ही हैं नर से नारायण बनने। इतना समय हम अपने को देह

समझ बैठे थे अब बाप ने हमको राइटियस रास्ता बताया है। देही-अभिमानि बनने में मेहनत लगती

है। घड़ी-घड़ी अपने नाम-रूप में फंस पड़ते हैं। बाप कहते हैं इस नाम-रूप से न्यारा होना है। अब

आत्मा भी नाम तो है ना। बाप है सुप्रीम परमपिता, लौकिक बाप को परमपिता नहीं कहेंगे। परम

अक्षर एक ही बाप को दिया है। वाह गुरु भी इनको कहते हैं। तुम सिक्ख लोगों को भी समझा

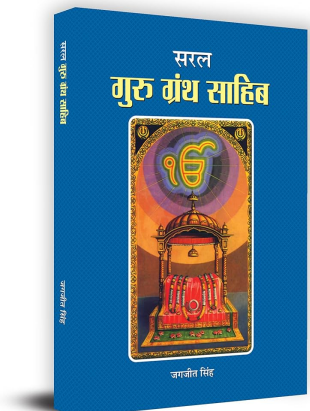
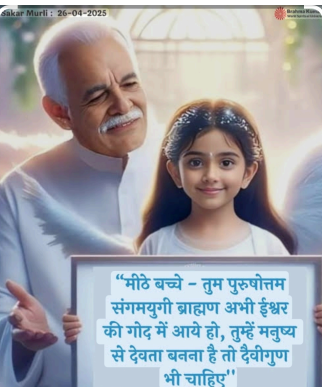
सकते हो। ग्रंथ साहेब में तो पूरा वर्णन है। और कोई शास्त्र में इतना वर्णन नहीं है जितना ग्रंथ में,

जप साहेब सुखमनी में है। यह बड़े अक्षर ही दो हैं। बाप कहते हैं - साहेब को याद करो तो तुमको 21

जन्म लिए सुख मिलेगा। इसमें मूझने की तो बात



हों बाबा, हाजीर बाबा, अभी बाबा...



Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

20-12-2025 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

ही नहीं। बाप बहुत सहज करके समझाते हैं।

कितने हिन्दू ट्रांसफर हो जाकर सिक्ख बने हैं।

तुम मनुष्यों को रास्ता बताने के लिए कितने चित्र

आदि बनाते हो। कितना सहज समझा सकते हो।

तुम आत्मा हो, फिर भिन्न-भिन्न धर्मों में आये हो।

यह वैरायटी धर्मों का झाड़ है और कोई को यह

पता नहीं है कि क्राइस्ट कैसे आता है। बाप ने

समझाया था - नई आत्मा को कर्मभोग नहीं हो

सकता। क्राइस्ट की आत्मा ने कोई विकर्म थोड़ेही

किया जो सजा मिले। वह तो सतोप्रधान आत्मा

आती है, जिसमें आकर प्रवेश करती है उनको

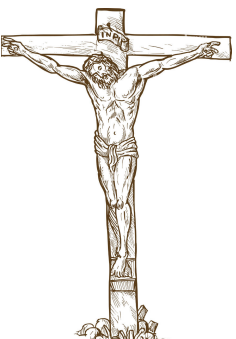
क्रास आदि पर चढ़ाते हैं, क्राइस्ट को नहीं। वह तो

जाकर दूसरा जन्म ले बड़ा पद पाती है। पोप के

भी चित्र हैं।



Secret Revealed



इस समय यह सारी दुनिया बिल्कुल ही वर्थ नाट ए

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

तुम

20-12-2025 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

पेनी है। तुम भी थे। अब तुम वर्थ पाउण्ड बन रहे हो। ऐसे नहीं कि उन्हों के वारिस पिछाड़ी में खायेंगे, कुछ भी नहीं। तुम अपने हाथ भरपूर कर जाते हो, बाकी सब हाथ खाली जायेंगे। तुम भरपूर होने के लिए ही पढ़ते हो। यह भी जानते हो जो कल्प पहले आये हैं वही आयेंगे। थोड़ा भी सुनेंगे तो आ जायेंगे। सब इकट्ठे तो देख भी नहीं सकेंगे। तुम ढेर प्रजा बनाते हो, बाबा सबको थोड़ेही देख सकते हैं। थोड़ा बहुत सुनने से भी प्रजा बनते जाते हैं। तुम गिनती भी नहीं कर सकेंगे।



shivbaba



ON DUTY

तुम बच्चे सर्विस पर हो, बाबा भी सर्विस पर है। बाबा सर्विस बिगर रह नहीं सकते। रोज़ सुबह को सर्विस करने आते हैं। सतसंग आदि भी सुबह को करते हैं। उस समय सबको फुर्सत होती है। बाबा तो कहते हैं तुम बच्चों को घर से बहुत सवेरे भी नहीं आना है और रात को भी नहीं आना चाहिए क्योंकि दिन-प्रतिदिन दुनिया बहुत खराब होती

Attention..!

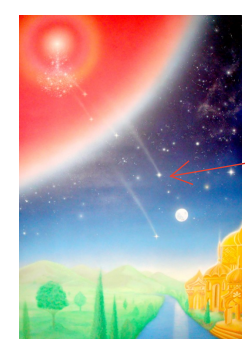
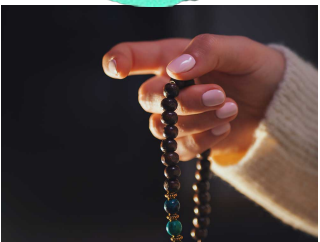
Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

20-12-2025 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

जाती है इसलिए गली-गली में सेन्टर ऐसा नज़दीक होना चाहिए, जो घर से निकले सेन्टर पर आये, सहज हो जाए। तुम्हारी वृद्धि हो जायेगी तब राजधानी स्थापन होगी। बाप समझाते तो बहुत सहज हैं। यह राजयोग द्वारा स्थापना कर रहे हैं।

बाकी यह सारी दुनिया होगी ही नहीं। प्रजा तो कितनी ढेर बनती है। माला भी बननी है। मुख्य तो जो बहुतों की सर्विस कर आपसमान बनाते हैं, वही माला के दाने बनते हैं। लोग माला फेरते हैं परन्तु अर्थ थोड़ेही समझते हैं। बहुत गुरू लोग माला फेरने के लिए देते हैं कि बुद्धि इसमें लगी रहे। काम महाशत्रु है, दिन-प्रतिदिन बहुत कड़ा

होता जायेगा। तमोप्रधान बनते जाते हैं। यह दुनिया बहुत गन्दी है। बाबा को बहुत कहते हैं हम तो बहुत तंग हो गये हैं, जल्दी सतयुग में ले चलो। बाप कहते हैं धीरज धरो, स्थापना होनी ही है - यह खातिरी है। यह खातिरी ही तुमको ले जायेगी। बच्चों को यह भी बताया है तुम आत्मायें परमधाम से आई हो फिर वहाँ जाना है, फिर आयेंगे पार्ट बजाने। तो परम-धाम को याद करना पड़े। बाप भी



न

योग

धारण



.imp.



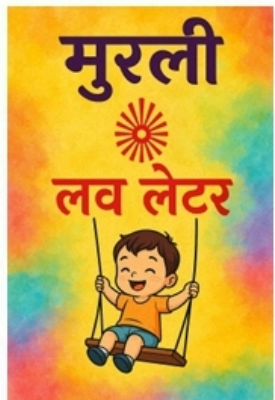
कहते हैं **मामेकम् याद करो तो विकर्म विनाश होंगे।** **यही पैगाम सभी को देना है और कोई पैगम्बर मैसेन्जर आदि हैं नहीं।** वे तो मुक्तिधाम से नीचे ले आते हैं। फिर उनको सीढ़ी नीचे उतरना है। **जब पूरे तमोप्रधान बन जाते हैं तब फिर बाप आकर सबको सतोप्रधान बनाते हैं।** तुम्हारे कारण सबको वापिस जाना पड़ता है क्योंकि तुमको नई दुनिया चाहिए ना - यह भी ड्रामा बना हुआ है। **बच्चों को बहुत नशा रहना चाहिए। अच्छा!**

जरा सोचो तो सही...

How lucky and Great we are...!

मैं कौन, मेरा कौन...!

सोचो तुमको कौन मिला है, कौन तुम्हारा साथी है।



मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।



आपका शुक्रिया

मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

धारणा के लिए मुख्य सार:-



1) इस देह के नाम-रूप से न्यारा होकर देही-अभिमानी बनना है। ऐसी चलन नहीं चलनी है जो सतगुरु की निंदा हो।



2) माला का दाना बनने के लिए बहुतों को आप समान बनाने की सेवा करनी है। आन्तरिक खुशी में रहना है कि हम राजाई लेने के लिए पढ़ रहे हैं। यह पढ़ाई है ही नर से नारायण बनने की।



Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

20-12-2025 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:- **निरन्तर याद द्वारा** **अविनाशी कमाई जमा**
करने वाले **सर्व खजानों के अधिकारी भव**

Finale Achievement



निरन्तर याद द्वारा हर कदम में कमाई जमा करते
रहो तो सुख, शान्ति, आनंद, प्रेम... इन सब खजानों
के अधिकार का अनुभव करते रहेंगे। कोई कष्ट,
कष्ट अनुभव नहीं होंगे।



संगम पर ब्राह्मणों को कोई कष्ट हो नहीं सकता।



यदि कोई कष्ट आता भी है तो बाप की याद दिलाने
के लिए, जैसे गुलाब के पुष्प के साथ कांटा उनके
बचाव का साधन होता है। वैसे यह तकलीफें और
ही बाप की याद दिलाने के निमित्त बनती हैं।



स्लोगन:- स्नेह रूप का अनुभव तो सुनाते हो अब

शक्ति रूप का अनुभव सुनाओ।



Points: ज्ञान योग धारणा





अव्यक्त इशारे -

अब सम्पन्न वा कर्मातीत बनने की धुन लगाओ



जैसे साकार में देखा लास्ट कर्मातीत स्टेज का पार्ट सिर्फ ब्लैसिंग देने का रहा, बेलेन्स की भी विशेषता और ब्लैसिंग की भी कमाल रही।



ऐसे फालो फादर। सहज और शक्तिशाली सेवा यही है।

Point to be Noted

अब विशेष आत्माओं का पार्ट है ब्लैसिंग देने का। चाहे नयनों से दो, चाहे मस्तकमणी द्वारा।



भारत में अनेक लोग सत्यनारायण का व्रत रखते हैं और कथा भी सुनते हैं। सत्यनारायण की कथा में लिखा है कि यह व्रत दुःख और शोक आदि को शान्त करने वाला, धन-धान्य बढ़ाने वाला, सौभाग्य देने वाला तथा सब जगह विजय प्राप्त कराने वाला है। बताया गया है कि यह कथा नैमिषारण्य तीर्थ में सूत जी, जोकि व्यास जी के शिष्य थे, ने शौनकादि अट्ठासी हजार ऋषियों को सुनाई। परन्तु जब मनुष्य प्रचलित सत्यनारायण कथा पढ़ता या सुनता है तो इसमें न तो श्री नारायण की कोई जीवन-कहानी है, न सत्य स्वरूप परमात्मा का कोई परिचय है और न ही किसी व्रत की व्याख्या की गयी है। केवल लिखा है कि अमुक-अमुक ने इस व्रत को किया तो उसे धन-धान्य, मुक्ति और वैकुण्ठ पद की प्राप्ति हुई और अमुक-अमुक ने इस व्रत को न करने का संकल्प किया या व्रत का प्रसाद नहीं लिया तो विपत्ति या दुःख में पड़ गये।

उदाहरण के तौर पर इसमें सबसे पहली कथा तो यह है कि काशीपुरी में शिवानन्द नाम का एक अत्यन्त निर्धन ब्राह्मण था जो कि भीख माँगने पर भी भूख से पीड़ित रहता था। भगवान उसके सामने एक बूढ़े ब्राह्मण के रूप में आये और उन्होंने उसे सत्यनारायण का व्रत करने के लिए कहा। उस व्रत को करने से उसे धन-सम्पत्ति तथा सुख का लाभ हुआ। दूसरी कथा लकड़ी बेचने वाले एक निर्धन भील की है। वह भी इस व्रत को करने से निर्धनता, दुःख तथा शोक से छूट गया और अन्त में वैकुण्ठ में देवपद को प्राप्त हुआ।

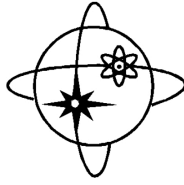
सत्यनारायण कथा में जो सबसे बड़ी कथा लिखी हुई है वह यह है कि एक वैश्य ने यह संकल्प किया कि उसके सन्तान होगी तो वह यह व्रत अवश्य

करेगा। परन्तु उसको जब एक कन्या उत्पन्न हुई तो उसने अपना वचन टाल दिया और कहा कि इसके विवाह के अवसर पर करूँगा। उस अवसर पर भी वह व्रत करना भूल गया। इसके परिणाम स्वरूप सत्यनारायण ने रुष्ट होकर उसे शाप दिया कि उस पर दुःख आये। तभी वहाँ राजा के यहाँ चोरी हो गई और राजा के दूत, वैश्य और उसके दामाद को चोर मानकर पकड़कर राजा के पास ले गये। राजा ने उन्हें जेल में बंद कर दिया। उधर लीलावती (वैश्य की स्त्री) ने पति के लौटने के मनोरथ को लेकर सत्यनारायण-व्रत किया और भगवान ने राजा को स्वप्न में आदेश दिया कि इन दोनों को छोड़ दो वरना मैं तुम्हारा नाश कर दूँगा।

जब राजा द्वारा मुक्त होकर दोनों अपने बेड़े की ओर लौट रहे थे तो सत्यनारायण ने सादे वेश में आकर पूछा - “वैश्य, तुम्हारे बेड़े में क्या है?” वैश्य बोला - “क्या कुछ लेने का विचार है क्या? इसमें तो लता-पत्ता आदि है।” तब बदले हुए वेश में सत्यनारायण बोले - ‘तथास्तु’। इसके परिणाम स्वरूप उस बेड़े में पड़ा सब धन-सोना आदि लता-पत्ता ही बन गया। परन्तु जब वैश्य ने लौटकर उस साधु वेशधारी से दुःख प्रगट किया तो उसने कहा - “तुम मेरी पूजा नहीं करते हो और व्रत नहीं करते हो इसलिए मेरी इच्छा से तुम्हें यह सब दुःख प्राप्त हो रहा है।” जब वैश्य ने व्रत करने का आश्वासन दिया तब भगवान की प्रसन्नता के फल स्वरूप लता-पत्ता के स्थान पर पहले की तरह सोना-चांदी, धनादि प्रगट हो गये। वैश्य और उसका दामाद आगे नगर के तट तक आ पहुँचे और बेड़े को तट से लगाकर उन्होंने नगर की भूमि पर पग धरे। कलावती (वैश्य की पुत्री), जो कि सत्यनारायण व्रत कर रही थी, पति और पिता के बेड़े के आने की सूचना पाकर सत्यनारायण का प्रसाद छोड़कर बेड़े की ओर चल पड़ी। प्रसाद न लेने का परिणाम यह हुआ कि उसका पति अदृश्य हो गया और बेड़ा डूबकर सागर तल में विलीन हो गया। परन्तु जब कलावती प्रसाद खाकर लौट आई तो उसका पति पुनः प्रकट हो गया और डूबा

हुआ बेड़ा भी तैर आया।

आध्यात्मिक भाव - श्री सत्यनारायण की कथा में जो वृद्ध ब्राह्मण आकर व्रत करने के लिए कहता है वे प्रजापिता ब्रह्मा हैं अर्थात् सत्य स्वरूप शिव बाबा एक साधारण वृद्ध ब्राह्मण के तन में दिव्य प्रवेश होकर श्री नारायण बनने की सच्ची कथा सुनाते हैं और पवित्रता अथवा ब्रह्मचर्य रूपी व्रत बताते हैं। शिव परमात्मा उसी वृद्ध प्रजापिता ब्रह्मा रूप ब्राह्मण द्वारा ही कंगाल भारत को कंचन के महलों वाला, सतयुगी पावन भारत अथवा स्वर्ग बनाते हैं। उसी रूप में भीलों के समान प्रायः निर्धन बने भारत को परमपिता शिव धनवान बना देते हैं और व्यापारियों के भी डूबे हुए जीव रूपी बे बेड़े को निकालकर पार उतारते हैं। सतयुग में सर्वगुण सम्पन्न, मर्यादा पुरुषोत्तम, 16 कला संपूर्ण श्री सत्यनारायण थे। वे ही त्रेतायुग में 14 कला सम्पन्न न चन्द्रवंशी बनते हैं। धीरे-धीरे वे पांच विकारों के जाल में जकड़ते जाते हैं। तब ब्रह्मा द्वार में केवल 8 कला ही बचती है। आत्माभिमानी से देहाभिमानी और पूज्य से पुजारी बन जाते हैं। कलियुग के अन्त में जब पूर्ण विकारी बन जाते हैं, तब सभी मनुष्य आत्माएं भी बहुत दुःखी बन जाती हैं तब अपने बच्चों की पुकार सुनकर पतित-पावन परमपिता परमात्मा शिव गीता में अपने वचन अनुसार इस कलियुगी, आसुरी सम्पदा वाली सृष्टि पर दिव्य रीति से अवतरित होते हैं। जिस साधारण एवं वृद्ध मनुष्य के शरीर में (सत्यनारायण के 84 वें जन्म में) प्रवेश करते हैं उसे उसके पूर्व के सभी जन्मों की कथा सुनाकर पतित से पावावन बनाते हैं और मुक्ति-जीवनमुक्ति का भागी बनाते हैं। यही है सत्य-नारायण की सच्ची कथा। यही वो कथा है जिससे श्री नारायण फिर से सर्वगुणसम्पन्न न बनते हैं। वास्तव में किसी भी नियम वा दिव्यगुण को धारण करके उसे अपनाये रहने के लिए दृढ़ संकल्प किये रहना ही व्रत लेना है। इस प्रकार जो कोई इस स सच्ची कथा को सुने और पवित्रता का व्रत धारण करे तो वह अवश्य ही नर से श्री नारायण बनता है।



never underestimate the power of diva

बापदादा बच्चों का सदा आगे बढ़ने का उमंग उत्साह देखते हैं। बच्चों का उमंग बापदादा के पास पहुँचता है। बच्चों के अन्दर है कि विश्व के वी.वी.आई.पी. बाप के सामने ले जाऊँ - यह उमंग भी साकार में आता जायेगा। क्योंकि निःस्वार्थ सेवा का फल ज़रूर मिलता है। सेवा ही स्व की स्टेज बना देती है। इसलिए यह कभी नहीं सोचना कि सर्विस इतनी बड़ी है मेरी स्टेज तो ऐसी है नहीं। लेकिन सर्विस आपकी स्टेज बना देगी। दूसरों की सर्विस ही स्व उन्नति का साधन है। ^{Automatically} सर्विस आपेही शक्तिशाली अवस्था बनाती रहेगी। बाप की मदद मिलती है ना। बाप की मदद मिलते-मिलते वह शक्ति बढ़ते-बढ़ते वह स्टेज भी हो जायेगी। समझा! इसलिए यह कभी नहीं सोचो कि इतनी सर्विस मैं कैसे करूँगा-करूँगी, मेरी स्टेज ऐसी है। नहीं। करते चलो। बापदादा का वरदान है - आगे बढ़ना ही है। सेवा का मीठा बंधन भी आगे बढ़ने का साधन है। जो दिल से और अनुभव की अथार्टी से बोलते हैं उनका आवाज दिल तक पहुँचता है। अनुभव की अथार्टी के बोल औरों को अनुभव करने की प्रेरणा देते हैं। सेवा में आगे बढ़ते-बढ़ते जो पेपर आते हैं वह भी आगे बढ़ाने का ही साधन हैं। क्योंकि बुद्धि चलती है, याद में रहने का विशेष अटेन्शन रहता है। तो यह भी विशेष लिफ्ट बन जाती है। बुद्धि में सदा रहता कि हम वातावरण को कैसे शक्तिशाली बनायें। कैसा भी बड़ा रूप लेकर

ये पक्का समझ लो..

समझा?



Mind very well...

Hence, Always engage yourself in diva-diva-diva...

कम शक्ति का
बड़ा शक्ति
m.m.m....imp.

87

Point to be Noted

Advantage of diva



फाइनल पेपर

विघ्न आए लेकिन आप श्रेष्ठ आत्माओं का उसमें फायदा ही है। वह बड़ा रूप भी याद की शक्ति से छोटा हो जाता है। वह जैसे कागज का शेर।

18/12/25

(27.02.1985)

9.5 दिनचर्या पर ध्यान और पूर्व तैयारी :

अमृतवेले की स्मृति का स्वरूप, गॉडली स्टडी करने की स्मृति का स्मृति-स्वरूप, कर्म करते हुए कर्मयोगी रहने के स्मृति-स्वरूप, ट्रस्टी बन अपने शरीर निर्वाह के व्यवहार के समय का स्मृति-स्वरूप, अनेक विकारी आत्माओं के सम्पर्क में आने का स्मृति स्वरूप, वायब्रेशन्स वाली आत्माओं का वायब्रेशन परिवर्तन करने का कार्य करते समय का स्मृति-स्वरूप — सब डायरेक्शन मिले हुए हैं। याद हैं? जैसे भविष्य में जैसा समय होगा वैसी ड्रेस चेन्ज करेंगे। हर समय के कार्य की ड्रेस और श्रृंगार अपना-अपना होगा। तो यह अभ्यास यहाँ धारण करने से भविष्य में प्रालब्ध-रूप में प्राप्त होंगे। वहाँ स्थूल ड्रेस चेन्ज करेंगे और यहाँ जैसा समय, जैसे कार्य वैसा स्मृति-स्वरूप हो। अभ्यास है वा भूल जाता है? इस समय के आपके अभ्यास का यादगार भक्तिमार्ग में भी जो विशेष नामीग्रामी मन्दिर हैं, वहाँ भी समय प्रमाण ड्रेस बदली करते हैं। हर दर्शन की ड्रेस अपनी-अपनी बनी हुई होती है। तो यह यादगार भी किन आत्माओं का है? जो आत्मायें इस संगमयुग पर जैसा समय, वैसा स्वरूप बनने के अभ्यासी हैं।



बापदादा बच्चों के सारे दिन की दिनचर्या को चेक करते हैं। रिजल्ट में समय प्रमाण 'स्मृति-स्वरूप' का अभ्यास कम दिखायी देता है। स्मृति में है, लेकिन स्वरूप में नहीं आता है।

समय होगा अमृतवेले का, जिस समय विशेष बच्चों के प्रति सर्वशक्तियों के वरदान का, सर्व अनुभवों के वरदान का, बाप समान शक्तिशाली लाइट हाउस, माइट हाउस स्वरूप में स्थित होने का, मेहनत कम और प्राप्ति अधिक होने का गोल्डन समय है। उस समय भी जो मास्टर बीज-रूप, वरदानी-स्वरूप की स्मृति होनी चाहिए उसके बजाय, समर्थी स्वरूप के बजाय, बाप समान स्थिति का अनुभव करने के बजाय कौन-सा स्वरूप धारण करते हैं? मैजारिटी उलहने देते या शिकायत करते हैं या दिलशिकस्त स्वरूप होकर बैठते। वरदानी, विश्व-कल्याणी स्वरूप के बजाय स्वयं के प्रति वरदान माँगने वाले बन जाते हैं या अपनी व दूसरों की

What we have to be...



ritVela.p65



85

What we are doing

2/18/2010, 11:58 AM

अमृतवेला

18/12/25

शिकायतें करेंगे। तो जैसा समय वैसा स्मृति-स्वरूप न होने से समर्थी स्वरूप भी नहीं बन पाते। इसी प्रकार से सारे दिन की दिनचर्या में, जैसा सुनाया कि समय प्रमाण स्वरूप धारण न करने के कारण, सफलता नहीं हो पाती, प्राप्ति नहीं हो पाती। फिर कहते हैं खुशी क्यों नहीं होती? इसका कारण क्या हुआ? मन्त्र और यन्त्र को भूल जाते हैं। पहले चेक करो कि जैसा समय वैसा स्वरूप रहा? अगर नहीं, तो फौरन अपने को चेक करने के बाद चेन्ज करो। कर्म करने से पहले स्मृति-स्वरूप को चेक करो, कर्म करने के बाद नहीं करो। कहीं भी कोई कार्य-अर्थ जाना होता है, तो जाने के पहले तैयारी करनी होती है, न कि बाद में। ऐसे हर काम के पहले स्थिति में स्थित होने की तैयारी करो। करने के बाद सोचने से कर्म की प्राप्ति के बजाय पश्चाताप हो जाता है। तो द्वापर से प्राप्ति की बजाय प्रार्थना और पश्चाताप किया, लेकिन अब प्राप्ति का समय है, तो प्राप्ति का आधार हुआ — जैसा समय वैसा स्मृति-स्वरूप।

समझा?

m.m.m....imp.

Mind very well...

Check to CHANGE